घरेलू वायु प्रदूषण से हर वर्ष 45 लाख मौतें

डॉ. महेश परिमल

कुछ दिनों पहले एक खबर थी कि अब शुद्ध वायु के लिए भी जेब ढीली करनी होगी। सचमुच अब समय आ गया है कि हमें शुद्ध वायु के लिए भी मशक्कत करनी होगी। क्योंकि अब बाहर ही नहीं, बल्कि घर की वायु भी अशुद्ध होने लगी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने हाल ही में जो रिपोर्ट दी है, उसमें कहा गया है कि घरेलू हवा के प्रदूषण से वर्ष 2012 में 45 लाख मौतें हो चुकी हैं। यह बात तब सामने आई है, जब एक आम आदमी खाद्य पदार्थों में मिलावट से परेशान है।

आज बहुत ही कम स्थान रह गए हैं, जहां की वायु को शुद्ध वायु कहा जा सकता है।

सड़क पर हज़ारों वाहन, बस्ती से दूर कल-कारखाने, खेतों पर छिड़की गईं जंतुनाशी दवाओं के कारण हर स्तर पर हवा प्रदूषित हो गई है। पूरे विश्व में ऐसी बहुत ही कम जगह बची है, जो इंसानी हरकतों से दूर है। हिमालय या अमेज़न के जंगलों में रोज़-रोज़ तो सांस लेने जाया नहीं जा सकता।

परंतु आम तौर पर इंसान यही समझता है कि घर से बाहर भले ही वायु प्रदूषित हो, पर घर की हवा तो शुद्ध होगी। पर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जो चौंकाने वाली जानकारी दी है, उससे यही लगता है कि अब घर की वायु भी शुद्ध नहीं रही, तो फिर इंसान क्या करे, कहां जाए? मतलब यही है कि एड्स, कैंसर, इबोला, मधुमेह, दमा जैसी खतरनाक बीमारियों से जितनी मौतें नहीं होती, उससे अधिक मौतें तो केवल शुद्ध वायु न मिलने के कारण होने लगी हैं। एक वर्ष में केवल अशुद्ध वायु से 45 लाख मौतें हो जाएं और हम पर कोई फर्क न पड़े, यह तो तभी संभव है यदि हम गाफिल रहें। बिगड़ चुके पर्यावरण की तरफ हमारा ध्यान ही नहीं है। आखिर क्यों हो गई हमारे घरों की हवा भी अशुद्ध?

शहरी घरों में रसोई गैस का प्रचलन बढ़ा है। पर ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी रसोई के लिए लकड़ी जलाई जाती है, जिसका धुआं ही मौत को आमंत्रित कर रहा है। यहीं पता चल जाता है कि घरेलू हवा कितनी प्रदूषित हो गई है। चूल्हे पर भोजन तैयार करती महिलाओं की स्थिति पर चर्चा करने के लिए अभी कोई तैयार नहीं है। भारत समेत कई देश ऐसे हैं, जहां 50 प्रतिशत से अधिक गांवों में चूल्हे से भोजन बनाया जाता है। इससे फैलने वाला धुआं आस-पड़ोस, गांव, शहर ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व को अपने प्रभाव में ले रहा है। इस धुएं से जितनी मौतें होती है, उससे काफी कम मौतें तो मलेरिया या एड्स से होती हैं।

ग्लोबल हेल्थ स्टडी नामक संस्था की रिपोर्ट के अुनसार विश्व में तीन अरब से अधिक लोग भोजन के लिए देशी चूल्हे का इस्तेमाल कर रहे हैं। लकड़ी जलाने के कारण ये चूल्हे प्रदूषण के बड़े कारखाने बने हुए हैं। इस प्रदूषण के कारण विश्व के 40-50 लाख लोग मौत के आगोश में समा

रहे हैं। तुलना के लिए, मलेरिया या एड्स से हर वर्ष कुल 27 लाख लोगों की मौत होती है।

हमारे देश में 60 प्रतिशत से अधिक लोग गांव में रहते हैं। गांव में सस्ते ईंधन के रूप में लकड़ी ही उपलब्ध है। देश के कोने-कोने में रसोई गैस की सुविधा नहीं है। इसलिए उन्हें मजबूरन लकड़ी का इस्तेमाल करना पड़ता है। हमारे देश में पानी और गटर की समस्या के बाद सबसे बड़ी समस्या प्रदूषण रहित चूल्हे की है। लकड़ी, घास, कंडे आदि का उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता है, इससे काफी धुआं फैलता है। इस धुएं में कार्बन डाईऑक्साइड और कार्बन मोनोऑक्साइड होते हैं। ये वायु में मिलकर सांस के साथ हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं, जिससे लम्बे समय बाद शरीर को काफी नुकसान होता है। इससे मौत समय से पहले आती है। धुएं के कारण दमा जैसी बीमारियों का प्रकोप बढ़ा है।

कुछ समय पहले ही वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइज़ेशन के पर्यावरण विभाग के प्रमुख डॉ. मारिया नैयर ने बहुत ही कड़े शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा था कि हमने पृथ्वी का वातावरण असहाय बना दिया है। स्वर्ग से सुंदर धरती को हमने नर्क बना दिया है। यदि ऐसा ही चलता रहा, तो हम इसी पृथ्वी को इतनी ज़हरीली बना देंगे कि यहां रहकर हम सांस भी नहीं ले पाएंगे। आज हृदय रोग एवं कैंसर जैसी बीमारियों के मूल में पृथ्वी का भयानक रूप से बदलता वातावरण ही है। कई देशों का ऋतु चक्र बदला है। हम विभिन्न प्रकार के प्रदूषण बहुत ही लापरवाही से फैला रहे हैं। पिछले कई दशकों से हवा में बढ़ रहा प्रदूषण सबसे विकराल है। वैश्विक स्वास्थ्य में इसके खतरनाक परिणाम देखने को मिल रहे हैं।

अभी हमारे पास थोड़ा-सा समय बचा है। हमारी भावी पीढ़ी पृथ्वी पर चैन से सांस ले सके, हमें इसके लिए अभी से तैयार रहना होगा। डॉ. नैयर की चिंता वाजिब है। दुनिया की कई संस्थाएं वायु प्रदूषण से जुड़े अनेक शोध की रिपोर्ट जारी करती है। पर डॉ. नैयर की रिपोर्ट का महत्व इसलिए अधिक है कि इसे डबल्यूएचओ ने पेश किया है।

लाखों लोग वायु प्रदूषण के शिकार हो रहे हैं। इसे दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला इनडोर और दूसरा आउटडोर। आधे से अधिक लोग इनडोर प्रदूषण का शिकार बनते हैं। जिसे गंभीर कहा जा सकता है। क्योंकि आउडडोर प्रदूषण सीधे लोगों के नियंत्रण में नहीं रहता। इसमें कारखानों से निकलने वाले धुएं और वाहनों से निकलने वाले धुएं को भी शामिल किया जा सकता है। इसके लिए संभवतः देश की सरकार को ज़िम्मेदार माना जा सकता है। परंतु इनडोर वायु प्रदूषण के लिए तो इंसान स्वयं ही जवाबदार है। इसके लिए सरकार को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यही इनडोर वायु प्रदूषण ही सबसे अधिक खतरनाक है। जब भी वायु प्रदूषण की बात चलती है, तब विकसित देश इसके लिए विकासशील देशों को दोषी ठहराते हैं। वायु प्रदूषण के सम्बंध में यह कहा जाता है कि 80 प्रतिशत प्रदूषण विकासशील और गरीब देश फैलाते हैं। यह अर्धसत्य है क्योंकि डबल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार ब्रिटेन के मेनचेस्टर, लिवरपूल, बर्मिंघम जैसे शहरों में स्थित कारखाने वायु प्रदूषण के लिए कुख्यात हैं। इस मामले में अमेरिका अपने आपको अलग मानता है। पर जब बात पूरी पृथ्वी की होती है, तो कोई एक देश इससे बच नहीं सकता। इसके लिए सबको मिल-जुलकर प्रयास करने होंगे।

विश्व के 8 लोगों में से एक सांस सम्बंधी बीमारी के शिकंजे में है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वायु प्रदूषण कितनी गंभीरता से हमारे शरीर में ज़हर बनकर प्रवेश कर रहा है। यह आंकड़ा तो प्रत्यक्ष रूप से वायु प्रदूषण का शिकार हुए लोगों का है। हमारे रोज़मर्रा के जीवन में वायु प्रदूषण से करोड़ों लोग जूझ रहे हैं। धीमे ही सही, पर ज़हर तो ज़हर का ही काम करता है। यह बात हम जितनी जल्दी समझ जाएं, उतना अच्छा। ***(स्रोत फीचर्स)***

2013 के स्रोत सजिल्द का ऑर्डर करें

मूल्य 200 रुपए (25 रुपए डाक खर्च)